'व्याख्या केन्द्र काशी की मठ-परंपरा' का उद्घाटन समारोह एवं 'काशी व्याख्यान-माला' का शुभारम्भ विषयक संगोष्ठी का संक्षिप्त विवरण
दिनांक १६ सितम्बर, २०१६

दिनांक १६ सितम्बर, २०१६ को इन्दिरा गान्धी राष्ट्रीय कला केन्द्र, क्षेत्रीय केन्द्र, वाराणसी के द्वारा गोपीराधा बालिका इण्टर कालेज में स्थापित 'काशी की मठ-परंपरा' पर आधारित व्याख्या केन्द्र का उद्घाटन हुआ और उसी दिन 'काशी व्याख्यानमाला' का भी शुभारम्भ किया गया।

छात्राओं ने मुख्य अतिथि रामकृष्ण मिशन सेवाश्रम के परियोजना समन्वायक स्वामी वरिष्ठानन्द जी के आगमन पर उनका स्वागत किया। प्रथमत: व्याख्या केन्द्र का उद्घाटन श्री स्वामीजी एवं विशिष्ट अतिथि श्री ओंकार नाथ शुक्ल, संयुक्त शिक्षा निदेशक, पंचम मण्डल, वाराणसी ने फीता काटकर किया।

मुख्य अतिथि श्रो स्वामी जी, विशिष्ट अतिथि श्री शुक्लजी, विशिष्ट वक्ता काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के भूगोल विभाग के निवर्तमान प्रो० राणा पी०बी० सिंह, इन्दिरा गान्धी राष्ट्रीय कला केन्द्र के परामर्शदाता प्रो० कमलेशदत्त त्रिपाठी एवं गोपीराधा बालिका इण्टर कालेज की प्रधानाचार्या डा० माधुरी पाण्डेय ने माँ सरस्वती के सम्मुख दीप प्रज्ज्वलित किया।

व्याख्या केन्द्र में कार्यक्रम का श्रीगणेश गोपीराधा बालिका इण्टर कालेज की छात्राओं के द्वारा प्रस्तुत मंगलाचरण, सरस्वती वन्दना एवं स्वागतगान से हुआ। मुख्य अतिथि श्री स्वामीजो का सम्मान इन्दिरा गान्धी राष्ट्रीय कला केन्द्र के परामर्शदाता प्रो० के०डी० त्रिपाठी ने पुष्पमाला एवं अंगवस्त्रम् प्रदान कर किया। विशिष्ट अतिथि श्री ओंकारनाथ शुक्ल का सम्मान डा० माधुरी पाण्डेय के द्वारा पुष्पगुच्छ, अंगवस्त्रम् एवं स्मृति चिह्न प्रदान कर किया गया। मुख्य वक्ता प्रो० राणा पी०बी० सिंह का सम्मान डॉ० प्रणति घोषाल ने पुष्पमाला एवं अंगवस्त्रम् प्रदान कर किया। संस्था के परामर्शदाता प्रो० के०डी० त्रिपाठी का सम्मान डॉ० माधुरी पाण्डेय ने पुष्पहार प्रदान कर किया। डा० माधुरी पाण्डेय का सम्मान श्रीमती निवेदिता लाल ने पुष्पहार प्रदान कर किया एवं साथ ही परिचय-पुस्तिका का विमोचन भी उपर्युक्त अतिथियों के द्वारा किया गया।

संस्था के परामर्शदाता प्रो० के०डी० त्रिपाठी ने अतिथियों के सम्मान में स्वागत भाषण प्रस्तुत किया और व्याख्या केन्द्र का परिचय एवं 'काशी व्याख्यानमाला' के उद्देश्य पर संक्षिप्त प्रकाश डालते हुए कहा कि काशी को समस्त भारतीय सारस्वत साधना एवं अध्यात्म का केन्द्र माना जाता ह। सभी धर्मों के अनुयायी जैन, बौद्ध काशी आना चाहते हैं। भारत की धर्मपरम्परा में विराट् विश्व का अनुशीलन होता रहा है। उसी विराट् विश्व की प्रतिकृति काशी है। जिस प्रकार काशी विराट् ब्रह्माण्ड और पिण्ड की एकता का प्रतीक है, उसी प्रकार वैदिक, श्रमणपरम्परा, बौद्ध, इस्लामिक, ईसाई एवं सारे पन्थों सहित एक व्यापक सहिष्णुता की यह भूमि है जहाँ सभी धर्म एक दूसरे से बातचीत करके लाभान्वित होते हैं। काशी भूमण्डल से थोड़ा ऊपर है यानी काशी अपने में एक ब्रह्माण्ड है। हमारी भाषा, आख्यान, मिथकों, रूपकों एवं प्रतीकों की भाषा है, जिन्हं समझना एवं व्याख्या करना बड़ा दुरूह कार्य है। आज के विद्वान् वक्ता प्रो० राणा पी०बी० सिंह इस विषय के अप्रतिम तथा अन्तरराष्ट्रीय ख्याति के विद्वान् हैं।

प्रमुख वक्ता पद से अन्तर्राष्ट्रीय यश के धनी सुप्रसिद्ध विद्वान् प्रो० राणा पी०बी० सिंह ने 'काशी का विश्व : सांस्कृतिक राजधानी काशी का पावन-भूगोल' विषय पर अपना वैदुष्यपूर्ण व्याख्यान प्रस्तुत

किया। अपने व्याख्यान में प्रथमतः 'मातृदेवोभव', 'पितृदेवोभव' एवं 'गुरुदेवो भव' श्रुति का उल्लेख करते हुए सम्मान्य स्वामी जी को अपना गुरु बताते हुए उनके साथ हुए परिचय का संस्मरण सुनाया।

काशी पर बोलते हुए प्रो० सिंह ने काशी के इतिहास तथा भूगोल पर प्रकाश डाला तथा इसक नाम बनारस का रहस्य (बना+रस) बताया और कहा कि काशी वरणा के किनारे से धीरे-धीरे दक्षिण की तरफ बढ़ती चली आई है तथा वरणा और असी के बीच में एवम् गंगा के तट पर बसी इस नगरी में पूरी भारतीय संस्कृति समाविष्ट है। प्रतीकों के माध्यम से जैसे नाग, नन्दी, माँ गंगा, चन्द्रमा, शंख, त्रिशूल इत्यादि से काशी का विश्लेषण किया। इसके अतिरिक्त काशी क्षेत्र, पंचक्रोशी यात्रा, यहाँ के वैदिक, वैष्णव, शैव, शाक्त (देवी), सूर्य, गणेश, कार्तिकेय, जैन, बौद्ध, इस्लामी तथा अन्य सभी पन्थों के मठों तथा धार्मिक स्थानों, प्रतीकों का व्याख्यान एवं चित्र प्रदर्शन के माध्यम से विशद विवेचन किया। इस प्रकार उन्होंने काशी के मठों, मन्दिरों एवं आश्रमों को बड़ी सहजता से प्रस्तुत किया।

अध्यक्ष पद से बोलते हुए श्री रामकृष्ण मिशन सेवाश्रम के परियोजना समन्वायक स्वामी वरिष्ठानन्द ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि 'एकं सद्विप्रा बहुधा भवन्ति' अर्थात् तत्त्व एक ही है उसको कई नाम से पुकारा जाता है। उन्होंने कहा कि मूल दिव्य तत्त्व एक ही है, संत लोग उसकी कई तरह से पूजा करते हैं। उदाहरणार्थ - मूल चीज पानी ही होता है। चाहे वह एक्वागार्ड का हो, मंदिर का हो, घाट का हो, मस्जिद इत्यादि कहीं का हो। इसका मूलरूपेण उदाहरण बनारस में दृष्टिगत होता है। हर एक मनुष्य परमात्मा का जीवन्त प्रतीक है। प्रतीकस्वरूप है। अतः काशी भारतीय संस्कृति का जीवन्त प्रतीक है। साथ ही गोपीराधा बालिका इण्टर कालेज की संस्कृति, खेल संस्कृति इत्यादि परम्परा की प्रशंसा करते हुए सबके प्रति शुभकामना एवं आशीर्वचन के साथ अपनी वाणी को विराम दिये।

उक्त कालेज की छात्राओं द्वारा शिववंदना 'कर्पूरगौरं करुणावतारं ...' से सांस्कृतिक कार्यक्रम की संक्षिप्त प्रस्तुति की गयी।

अन्त में गोपीराधा बालिका इण्टर कालेज की प्रधानाचार्या डॉ० माधुरी पाण्डेय ने धन्यवाद ज्ञापन किया। सभा में प्रो० मारुतिनन्दन प्रसाद तिवारी, डा० एस०पी० पाण्डेय, डा० ओ०पी० सिंह सहित अनेक गणमान्य लोग उपस्थित थे।

कार्यक्रम का संचालन इन्दिरा गान्धी राष्ट्रीय कला केन्द्र, वाराणसी के डॉ० त्रिलोचन प्रधान ने किया । कार्यक्रम के समापन पर सबको सूक्ष्म जलपान कराया गया।